शैक्षणिक वर्ष:2023 24
(पाठ्यक्रम विवरण:अगस्त-दिसंबर)

पाठ्यक्रम: बीए ऑनर्स
सेमेस्टर: प्रथम
पेपर: हिंदी कविता:आदिकाल एवं निर्गुण भक्ति काव्य
शिक्षक: डॉ अनीता

<u>पाठ्यक्रम</u>

<u>इकाई -1</u>

चंद्रवरदाई-पृथ्वीराज रासो,संपादक हजारी प्रसाद द्विवेदी,नामवर सिंह

बानबेध समय
कवित्त **(10-11)**

- प्रथम मुक्कि दरबार।लज्ज सर सुरतानी ।।
  किहि थानं लोइ संभरी घनी। कहौ सुबत्त लज्जौ न लजि ।।

बानबेध समय
दूहा **(20-33, 49)**

- हम अबुद्धि सुल्तान इह ।भट्ट भाष सुष काज ।।
  प्रथम राज पासहु गयौ जब रूक्कयौ दह हथ्थ।।

- चवै चंद बरदाई इम ।सुति मीरन सुनतान ।।
  दे कमान चौहान कौं ।साहि दियै कछु दान ।।

बानबेध समय
पद्धरी **(50-53)**

- संगहें पान कम्मान राज ।उभ्भरे अंग अंतर विराज ।।
  निसुरत्ति आनि दिय साहि हथ्थ । तरकस्स तीर गोरी गुरथ्थ।।

बानबेध समय
कवित्त **(54,55,56)**

- ग्रहिय तीर गोरिस्स। कीन बीन इच्छ अप्प कर ।।
  श्रृंगार वीर करूना विभछ ।भय अद्भूत इसंत सम।।

<u>इकाई-2</u>

विद्यापति- संपादक .डॉ शिव प्रसाद सिंह, (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)

<u>वंशी माधुरी</u>

- नंदक नंदन कदम्बेरि तरूतरे
  वन्दह नंदकिसोरा ।।

<u>रूप वर्णन</u>

- देख- देख राधा- रूप अपार
  करू अभिलाख मनहि पद-पंकज अहोनिसि कोर अगोरि ।

<u>पद-14</u>

- चांद-सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे।
  रूप नारायन ई रस जानथि सिबसिंघ मिथिला भूपे।

पद-**24**

- बदन चाँद तोर नयन चकोर मोर।
  रुपनारायन जाने।।

इकाई-**3**

कबीर-कबीर ग्रंथावली,संपादक-डॉ श्याम सुंदर दास

साखी : गुरुदेव कौ अंग **- 1** से **16** तक
विरह कौ अंग **- 1** स **8, 21,22,23, 44,45**
पद संख्या : **- 378,400**

इकाई-**4**

जायसी- जायसी ग्रंथावली-संपादक रामचंद्र शुक्ल
मानसरोदक - खंड

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं को हिंदी साहित्य के आदिकालीन और भक्तिकालीन साहित्य एवं उनकी विभिन्न परिस्थितियों से अवगत कराया जाता है।हिंदी साहित्य के स्वर्ण-युग भक्तिकाल के विषय में विशेष रूप से जानकारी देना होता है।भक्तिकाल के अध्ययन के माध्यम से मानवीय और नैतिक मूल्यों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।भक्तिकालीन साहित्य में सामंती व्यवस्था और हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल का काव्य एक विशिष्ट उपलब्धि है इससे छात्रों को बताया जाता है ।आदिकाल के

दो प्रमुख कवियों चंदवरदाई और विद्यापति की आदिकाल में क्या भूमिका के विषय में विद्यार्थियों से चर्चा की जाती है।निर्गुण भक्तिकाव्य के अंतर्गत संत काव्य एवं प्रेमाख्यानक काव्य के प्रमुख कवियों कबीर, जायसी आदि का अध्ययन करना और हिंदी साहित्य में उनके योगदान के विषय में विद्यार्थियों को समझाया जाता है।

शिक्षण समय : **15** सप्ताह**(**लगभग**)**

कक्षाएं : कोर पेपर के पाठ्यक्रम की रूपरेखा के अनुसार सप्ताह के तीन दिन प्रस्तुत समय सारणी द्वारा कक्षाएं आयोजित की जाएगी।ट्यूटोरियल कक्षाओं में छात्राओं के प्रश्नों,शंकाओं का समाधान और निर्धारित कवियों पर विचार विमर्श किया जाएगा।ट्यूटोरियल कक्षाएं नियमानुसार **20** विद्यार्थी प्रति ग्रुप के हिसाब से प्रत्येक सप्ताह तथा हर प्रश्न-पत्र में होगी।असाइनमेंट,टेस्ट और प्रस्तुतिकरण के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन किया जाएगा।

इकाई अनुसार पाठ्यक्रम विवरण

सप्ताह	विषय
सप्ताह **- 1**	हिंदी साहित्य के इतिहास से अवगत कराना
सप्ताह **- 2**	आदिकाल एवं भक्तिकाल के प्रमुख कवियों के विषय में छात्राओं से चर्चा करना
सप्ताह **- 3**	रासो एवं लौकिक काव्य के विषय में छात्राओं को समझना
सप्ताह **- 4**	पृथ्वीराज रासो
सप्ताह **- 5**	पुर्नावृत्ति एवं असाइनमेंट
सप्ताह **- 6**	विद्यापति
सप्ताह **- 7**	विद्यापति पर आधारित प्रश्नों के विषय में

	चर्चा करना
सप्ताह **- 8**	पुर्नावृत्ति एवं टेस्ट
सप्ताह **- 9**	कबीर
सप्ताह **-10**	जायसी
सप्ताह **-11**	पुर्नावृत्ति एवं प्रस्तुतीकरण
सप्ताह **-12**	सामूहिक चर्चा
सप्ताह **-13**	विशेष व्याख्यान एवं टेस्ट

सप्ताह **-14**	छात्राओं की शंकाओं का समाधान
सप्ताह **-15**	आंतरिक मूल्यांकन

संबंधित पुस्तकें :

- त्रिवेणी-रामचंद्र शुक्ल
- कबीर-हजारी प्रसाद द्विवेदी
- भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य-मैनेजर पांडे
- हिंदी सूफी काव्य की भूमिका-राम पूजन तिवारी
- सूफी कविता की पहचान-यश गुलाटी
- निर्गुण काव्य में नारी-अनिल राय
- लोक जागरण के सूत्रधार : चौथीराम यादव